पाठ 24

सिक्ख एवं मराठा शक्ति का उत्कर्ष

आइए सीखें

- सिक्ख एवं मराठा शक्ति के उत्कर्ष के क्या कारण थे?
- सिक्ख गुरुओं के जीवनकाल की महत्वपूर्ण विशेषताएँ क्या थीं?
- शिवाजी के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएँ कौन-कौन सी थीं?
- शिवाजी का शासन प्रबंध कैसा था?

आप पढ़ चुके हैं कि मुगल सम्राट औरंगजेब की कट्टर धार्मिक नीतियों के परिणामस्वरूप कुछ सशक्त विरोध उठ खड़े हुए थे। इनमें सबसे अधिक सुदृढ़ विरोध सिक्खों और मराठों के उत्कर्ष के रूप में सामने आया। साथ ही सिक्खों तथा मराठों के उत्कर्ष के लिए और भी कई कारण उत्तरदायी थे।

सिक्ख शक्ति का उत्कर्ष

सिक्ख धर्म के प्रणेता गुरुनानक थे। इनका जन्म लाहौर के निकट तलवन्डी ग्राम में 1469 ई. में हुआ था। ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त होने के पश्चात् वे धार्मिक उपदेश देने लगे। पंजाब में उनके सिद्धांतों के अनुयायियों का एक सम्प्रदाय बना, जो सिक्ख (शिष्य) सम्प्रदाय के नाम से विख्यात हुआ। गुरुनानक को सिक्खों का प्रथम गुरु माना जाता है।

सिक्खों के चौथे गुरु रामदास ने (1575-81 ई.) सम्राट अकबर से भूमि लेकर रामदासपुर बसाया और "सन्तोषसर" व "अमृतसर" नामक दो तालाब निर्मित किए। पाँचवे गुरु अर्जुनदेव (1581-1606 ई.) पर मुगल सम्राट जहाँगीर ने अपने विद्रोही पुत्र खुसरो को सहायता देने का आरोप लगाया और उनका वध करवा दिया। अर्जुनदेव के बलिदान ने सिक्खों में रोष उत्पन्न कर दिया। उनमें एक नवीन चेतना का संचार हुआ, जिसने उन्हें सुदृढ़ संगठित शस्त्रधारी बना दिया। पूर्व के सभी गुरुओं के उपदेशों का संकलन करके उन्होंने "गुरु ग्रन्थ साहब" का सम्पादन किया, जो सिक्खों का पवित्र ग्रन्थ है।

सिक्खों के छठवें गुरु हरगोविन्द (1606-1645 ई.) ने राजकीय चिह्न और सैनिक वेशभूषा धारण की। उन्होंने सिक्खों से नगद भेंट के स्थान पर घोड़ों और शस्त्रों की भेंट लेना प्रारंभ किया। समस्त सिक्खों को शस्त्र रखने को कहा। सिक्खों के नौवे गुरु तेगबहादुर (1664-1675 ई.) थे, जिनके विषय में आप पूर्व में पढ़ चुके हैं।

शिक्षण संकेत

- शिक्षक पूर्व में पाठ का अध्ययन कर कक्षा में कहानी के रूप में सुनाएँ।
- मानचित्र की सहायता से शिवाजी के राज्य विस्तार को समझाएँ।

गुरु तेगबहादुर के पुत्र गुरु गोविन्दसिंह (1675-1708 ई.) दसवें गुरु थे। इन्होंने सिक्ख सम्प्रदाय को "खालसा" का नाम देकर एक पृथक समूह का निर्माण किया। उन्होंने प्रत्येक सिक्ख को केश, कंघा, कृपाण, कच्छा व कड़ा रखने के आदेश दिए। उन्होंने सिक्ख समुदाय को एक शक्तिशाली संगठन के रूप में बदल दिया। यह समूह पंजाब में मुगलों की सत्ता के लिए खतरा बन गया। **फिर भी वे जीवनभर धार्मिक अत्याचारों और धर्मान्धता की नीति के विरुद्ध संघर्ष करते रहे।**

गुरु गोविन्दसिंह की मृत्यु के पश्चात् बंदा बहादुर ने नेतृत्व संभाला। संगठित सिक्खों ने सरहिन्द तथा सतलज और यमुना नदी के बीच के क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। औरगंजेब के उत्तराधिकारी मुगल सम्राट फरूखसियर ने बंदा बहादुर को यातना देकर मरवा डाला। सिक्ख अनुयायियों ने उन्हें "सच्चा पादशाह" की उपाधि दी।

गुरुनानक और गुरु गोविन्दसिंह की शिक्षाओं को पंजाब व सीमावर्ती क्षेत्रों के लोगों ने आत्मसात कर लिया था। इस प्रकार सिक्खों ने अपने आप को सिक्ख राज्य के रूप में संगठित करना प्रारंभ कर दिया। नादिरशाह और अहमदशाह अब्दाली के आक्रमणों के पश्चात् पंजाब की अशांति और अव्यवस्था ने सिक्खों के उत्थान में सहायता की।

1764 में सिक्ख अमृतसर में एकत्र हुए और देग, तेग, फतेह चिह्नों वाले चाँदी के सिक्के जारी किये। ये पंजाब में सिक्ख संप्रभुत्ता की प्रथम घोषणा थी। उन्होंने अपने आप को बारह मिसलों (लोकतांत्रिक आधार पर गठित सैनिक भातृत्व) में संगठित कर पंजाब पर सत्ता स्थापित की। इन्हीं मिसलों को एकत्रित करके अठारहवीं शताब्दी के अन्त में रणजीत सिंह ने शक्तिशाली सिक्ख राज्य की स्थापना की।

- **सिक्ख धर्म के प्रणेता गुरुनानक थे।**
- **पाँचवे गुरु अर्जुनदेव के समय में गुरुग्रंथ साहब (सिक्खों का पवित्र ग्रंथ) का संकलन किया गया।**
- **दसवें गुरु गोविन्दसिंह ने सिक्खों को एक सशस्त्र सैनिक समूह के रूप में संगठित किया।**

मराठा शक्ति का उत्कर्ष

एक राजनैतिक शक्ति के रूप में मराठों का उदय सत्रहवीं शताब्दी में हुआ। इस समय महाराष्ट्र का अधिकांश भाग अहमदनगर के निजाम शाही और बीजापुर के आदिल शाही के आधिपत्य में था। मराठे दक्षिण भारत के राज्यों में किलेदार, हिशेबनीस (लेखाधिकारी), कारकून आदि अनेक छोटे-छोटे पद पर कार्य करते थे। कोंकण के प्रदेश में सिद्दी व पुर्तगालियों की समुद्री शक्ति बढ़ी हुई थी। इन सभी सत्ताओं में निरंतर चलने वाले संघर्षों के कारण महाराष्ट्र में जन-जीवन असुरक्षित तथा अस्थिर था।

■ शिवाजी (1627-1680 ई.)

चित्र क्र.-51: छत्रपति शिवाजी

मराठा शक्ति को चर्मोत्कर्ष पर पहुँचाने वाले महान सेनानायक शिवाजी थे। शिवाजी का जन्म 1627 ई. में हुआ, किन्तु कुछ विद्वान उनके जन्म को 1630 ई. में मानते हैं। उनके पिता शाहजी भोसले बीजापुर शासक के अधीन एक प्रमुख सरदार थे। बचपन से ही शिवाजी के जीवन पर माता जीजाबाई तथा शिक्षक दादाजी कोंड़देव का बहुत प्रभाव पड़ा। उन्होंने शिवाजी को स्वतंत्रता और सदाचार की शिक्षा दी। धर्म की रक्षा के लिए स्वराज्य स्थापना के कार्य को उन्होंने निरंतर प्रोत्साहन दिया। समर्थ रामदास शिवाजी के गुरु थे, उन्होंने शिवाजी को ''हिन्दवी राज्य'' (हिन्दू पद पादशाही) स्थापित करने के लिए प्रेरित किया।

युवावस्था में ही स्वराज्य की स्थापना के उद्देश्य को लेकर शिवाजी ने आदिलशाह के अधिकार में जो किले थे, उन्हें जीतने का कार्य आरंभ किया। इस कार्य के लिये उन्होंने छापामार गुरिल्ला युद्ध प्रणाली को अपनाया था। शिवाजी के इस कार्य का कुछ आदिलशाही मराठा सरदारों ने विरोध किया, जिनमें जावली के मोरे प्रमुख थे। उन्होंने शिवाजी के प्रभुत्व को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया, फलस्वरूप शिवाजी ने जावली पर अधिकार कर लिया। वे भारत में हिन्दू राज्य की स्थापना करना चाहते थे।

कोंकण विजय - यह प्रदेश पश्चिमी समुद्र किनारे पर स्थित है। शिवाजी ने इस पर आक्रमण किया और कल्याणी तथा भिवंडी के दुर्ग पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया।

बीजापुर से संघर्ष - शिवाजी के विजय अभियान से बीजापुर का सुल्तान भयभीत हो गया। शिवाजी को दरबार में जीवित या मृत किसी भी रूप में उपस्थित करने का कार्य सेनापति अफजल खाँ को सौंपा। अफजल खाँ ने शिवाजी को षड्यंत्र से मारने की योजना बनाई, किन्तु शिवाजी को इस षड्यंत्र का पता चल गया और अपनी रक्षा के लिये उन्होंने अफजल खाँ का वध कर दिया।

शिवाजी का मुगलों से संघर्ष - औरंगजेब शिवाजी की बढ़ती हुई शक्ति से चिन्तित हुआ और उनका दमन करने का निश्चय किया। उसने शाइस्ता खाँ को दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया। शाइस्ता खाँ ने पूना पर कब्जा कर लिया। शिवाजी ने बड़ी चतुराई से शाइस्ता खाँ को मात दी। शिवाजी के आक्रमण से शाइस्ता खाँ की अगुँलियाँ कट गई थीं, उसे जान बचा कर भागना पड़ा।

मानचित्र क्र.-6: छत्रपति शिवाजी का राज्य

पुरन्दर की सन्धि - शाइस्ता खाँ की असफलता के पश्चात् औरंगजेब ने शिवाजी के दमन करने का कार्य राजा जयसिंह को सौंपा तथा दिलेर खाँ को विशाल सेना के साथ उसकी सहायता के लिये भेजा। मुगल सेना ने पुरन्दर को घेर लिया। अपने प्रदेश को हानियों से बचाने के लिए शिवाजी ने राजा जयसिंह से पुरन्दर की सन्धि कर ली। उन्होंने अपने तेईस किले मुगल बादशाह को सौंप दिये। जयसिंह ने शिवाजी को आगरा जाने और सम्राट से भेंट करने के लिये राजी कर लिया। शिवाजी का आगरा जाने का उद्देश्य औरंगजेब की सत्ता, शक्ति और साधनों की यथेष्ट जानकारी प्राप्त करना था। शिवाजी अपने पुत्र सम्भाजी के साथ औरंगजेब के दरबार में उपस्थित हुए। दरबार में अपने प्रति अपमानजनक व्यवहार से शिवाजी क्रोधित होकर दरबार छोड़कर चले गये। औरंगजेब ने इसे अपना अपमान समझा और शिवाजी को बंदी बना लिया गया। तीन माह पश्चात् शिवाजी बन्दीगृह से मिठाई के टोकरे में छिपकर सफलतापूर्वक भाग निकले।

आगरा से लौटने के पश्चात् शिवाजी स्वराज्य स्थापना के कार्य में पुनः लग गए। उन्होंने कल्याणी, भिवांडी, पुरन्दर, सिंहगढ़ आदि पर अधिकार स्थापित कर लिया। इस समय शिवाजी का प्रभाव क्षेत्र विस्तृत हो चुका था। वे मुगल क्षेत्रों से चौथ और सरदेशमुखी वसूल करते थे। बीजापुर तथा गोलकुण्डा, उन्हें कर देते थे।

शिवाजी ने मराठा राज्य को स्वतंत्र घोषित कर दिया, परन्तु औरंगजेब उन्हें एक जागीरदार और बीजापुर का सुल्तान, उन्हें विद्रोही सामन्त मानते थे। इस विषमता को दूर करने के लिये और स्वतंत्र रूप से युद्ध और सन्धि वार्ता करने का अधिकार प्राप्त करने के उद्देश्य से शिवाजी ने रायगढ़ में 1674 ई. में अपना राज्याभिषेक करवाया तथा ''हिन्दवी राज'' स्थापित किया। महाराष्ट्र में शिवाजी के पक्ष में एक जन आंदोलन उठ खड़ा हुआ था। महाराष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति के मन में देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी।

शिवाजी ने पारंपरिक हिन्दू रीति से अपना राज्याभिषेक कराया। उन्होंने पूना के निकट रायगढ़ में 1674 ई. में एक भव्य दरबार का आयोजन कर छत्रपति की उपाधि धारण की।

शिवाजी की अन्य विजय - शिवाजी ने मुगल सेनापति बहादुर खाँ के शिविर पर आक्रमण किया। करोड़ो रूपये के अश्व प्राप्त किये। उन्होंने गोलकुण्डा के सुल्तान से मैत्री सन्धि कर ली, जिसमें मुगलों के विरुद्ध एक-दूसरे की सहायता का वचन दिया। इसके पश्चात् शिवाजी ने दक्षिण के प्रदेश कर्नाटक पर आक्रमण किया और जिंजी तथा वैलूर को जीता। शिवाजी ने बीजापुर राज्य के समुद्री तट के प्रदेशों को भी अपने अधिकार में कर लिया। सन् 1680 में शिवाजी की मृत्यु हो गई।

शिवाजी का शासन प्रबंध - शिवाजी के शासन प्रबंध का मुख्य उद्देश्य प्रजा की सुख-समृद्धि तथा मातृभूमि की रक्षा के लिये श्रेष्ठ सेना का गठन करना था। शिवाजी में उच्च कोटि की प्रशासनिक क्षमता थी।

केन्द्रीय शासन - राज्य की सारी शक्ति शिवाजी के पास केन्द्रित थी। वे राज्य के सर्वेसर्वा थे। असीम निरंकुश शक्तियों के होते हुए भी शिवाजी ने उनका उपयोग जन-कल्याण के कार्यों के लिये किया।

अष्ट प्रधान - शिवाजी ने शासन प्रबंध में सहायता और परामर्श के लिए आठ मंत्रियों की परिषद् बनाई, जिसे अष्ट प्रधान कहा जाता था। प्रत्येक व्यक्ति अपने विभाग का प्रमुख होता था, लेकिन सभी शिवाजी की अध्यक्षता में ही कार्य करते थे। ये अष्ट प्रधान इस प्रकार थे-

(1) पेशवा (प्रधानमंत्री) (2) अमात्य (वित्तमंत्री) (3) सुमंत (विदेशमंत्री)

(4) मंत्री (5) सचिव (6) पंडितराव (पुरोहित)

(7) सेनापति (8) न्यायाधीश।

राज्य का विभाजन - शासन को सुचारु रूप से चलाने के लिये शिवाजी ने राज्य को प्रांतों और प्रत्येक प्रांत को जिलों और परगनों में बाँटा था। प्रत्येक प्रान्त का प्रमुख प्रान्तपति या सूबेदार होता था।

राज्य की आय के साधन - राज्य की आय का प्रमुख साधन भूमि कर, व्यापारिक कर, चौथ तथा

सरदेशमुखी था। भूमिकर के रूप में उपज का तीस प्रतिशत और बाद में चालीस प्रतिशत लिया जाने लगा।

सैनिक व्यवस्था - शिवाजी ने नियमित एवं स्थायी सेना की व्यवस्था की थी। उनकी सेना में पैदल, अश्वारोही तथा जल सेना थी। सैनिकों पर कठोर अनुशासन व नियंत्रण रहता था। आक्रमण के समय कृषि को हानि नहीं पहुँचायी जाती थी। रामायण, गीता, कुरान आदि पवित्र ग्रंथों की रक्षा करना व स्त्रियों, बच्चों तथा वृद्धों का अपमान न होने देना, यह सैनिकों का प्रमुख कर्त्तव्य था।

शिवाजी न केवल वीर सेनानायक और कूटनीतिज्ञ थे, बल्कि उत्तम शासक भी थे। धार्मिक सहिष्णुता, उच्च कोटि का चरित्र, न्यायप्रियता और कुशल प्रशासन के कारण, वे महान शासक के रूप में प्रसिद्ध हुए।

अहिल्याबाई-

महारानी अहिल्याबाई का जन्म ग्राम चौंडी, तहसील बीड जिला औरंगाबाद (वर्तमान में तहसील जामखेड़, जिला अहमदनगर, महाराष्ट्र) में 31 मई 1725 ई. को हुआ। अहिल्याबाई का विवाह अल्पायु में 1733 ई. में प्रतिष्ठित होल्कर राजघराने में मल्हारराव के पुत्र खण्डेराव के साथ हुआ। पति एवं पुत्र के निधन के पश्चात इन्होंने होल्कर राज्य की बागडोर 1766 ई. में अपने हाथ में ली।

शासन व्यवस्था

अहिल्याबाई की शासन व्यवस्था में केन्द्रीय शासन मंत्री दीवान, सलाहकार, प्रान्तीय शासन व्यवस्था, विभागवार अधिकारी इस प्रकार और छोटे गांव तक की व्यवस्था के लिए ग्राम पंचायत तक की व्यवस्था उनके राज्य में थी। इनके साथ ही बहुत सारे सरदारों के पास सरजामी जागीरे होने से उन पर भी उनका पूरा नियंत्रण था। उनके राज्य में पत्रों के माध्यम से प्राप्त सूचनाओं के त्वरित समाधान हेतु अधिकारियों के पास पहुँचाने की व्यवस्था थी।

निर्माण कार्य

अहिल्याबाई ने सम्पूर्ण भारत वर्ष में कई तीर्थ स्थानों का निर्माण कराया। हिमालय की वादी से समुद्र के सागर तट तक उनके निर्माण कार्यों की छटा दिखती है। आततायियों द्वारा खंडित पूजा स्थलों का भी उन्होंने जीर्णोद्धार कराया है। मंदिर, घाट, बावडी, कुएँ, धर्मशालाएँ, मुख्य मार्गों पर वृक्षारोपण आदि कार्य भी करवाए गए। मंदिरों में कलात्मक मूर्तियाँ भी उन्होंने स्थापित करवाईं।

वित्तीय व्यवस्था

भू-राजस्व राज्य की आय का प्रमुख स्रोत था। जमींदार वर्ष भर का हिसाब देते थे। अहिल्याबाई द्वारा समय-समय पर स्वयं सारा हिसाब जांचा जाता था। जानबूझकर धनराशि में हेरा-फेरी करने वालों को कठोर दण्ड दिया जाता था।

अहिल्याबाई स्वयं एक न्याय प्रिय शासिका थीं। उस समय न्यायालयों की व्यवस्था नहीं थी। वे स्वयं ही राजदरबार में लोगों की प्रार्थनाएँ सुनकर न्याय देती थीं।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) 'खालसा' समूह का निर्माण किया-

(अ) गुरु गोविन्दसिंह ने (ब) गुरु तेगबहादुर ने

(स) बंदा बहादुर ने (द) गुर हरगोविन्द ने

(2) मराठा शक्ति के संगठन का श्रेय है -

(अ) सम्भाजी को (ब) शाहजी को

(स) शिवाजी को (द) पेशवा को

(3) शिवाजी की बढ़ती शक्ति को देखकर बीजापुर के सुल्तान ने शिवाजी का दमन करने के लिये किसे भेजा था–

(अ) अफजल खाँ को (ब) आदिल खाँ को

(स) शाइस्ता खाँ को (द) हसनशाह को

(4) शिवाजी के अष्ट प्रधान में सर्वोच्च स्थान था -

(अ) अमात्य का (ब) सचिव का

(स) पंडितराव का (द) पेशवा का

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(1) ''सच्चा पादशाह'' की उपाधि ..... को दी गई।

(2) सिक्खों के प्रथम गुरु ..... थे।

(3) शिवाजी ने अपना राज्यभिषेक कराकर ..... की उपाधि धारण की।

(4) शिवाजी के राज्य की आय का साधन ..... था।

3. लघु उत्तरीय प्रश्न–

(1) गुरु गोविन्द सिंह ने सिक्ख शक्ति को मजबूत करने के लिये क्या प्रयास किये थे?

(2) शिवाजी को प्रारम्भिक जीवन में किस प्रकार की शिक्षा मिली?

(3) शिवाजी ने अफजल खाँ का वध क्यों किया?

(4) टिप्पणी लिखिये –

(अ) अष्ट प्रधान। (ब) शिवाजी की सैनिक व्यवस्था।

4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(1) मुगल तथा सिक्ख संबंधों को स्पष्ट कीजिये।

(2) ''शिवाजी में उच्चकोटि की प्रशासनिक क्षमता थी'', स्पष्ट कीजिये।

परियोजना कार्य–

- शिवाजी के शासन की किसी एक महत्वपूर्ण घटना को नाटक के रूप में कक्षा में मंचित करें।
- सिक्खों के दस गुरुओं के नामों की सूची बनाकर उनके चित्रों सहित कक्षा में दिखाएँ।